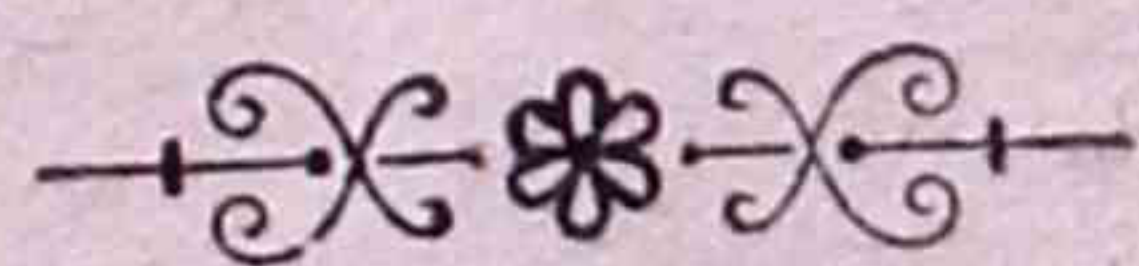


ज्ञानगारी चतुर्दश



जिसको

पंडित पूरनमल मुदर्सि हल्काबन्दी स्कूल चिरगाँव,
परगना मोठ, जिला भाँसी ने मुमुक्षुओं और
भक्तजनों के विनोदार्थ बनाया ।



छठवीं बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा,

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९४१ ई०

[संपादित संस्करण]

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

श्रीगणेशाय नमः ।

ज्ञानगारी चतुर्दश

पहली गारी

सुनियो हो तुम जगके प्राणी नामरूप सब मानी बे ।
नामरूप की अकथ कहानी सबने कही बखानी बे १
नामरूप का भेद न जानो तासों फिरत दुखानी बे ।
जग-समुद्र में नामहिं नौका ताको तू बिसरानी बे २
नाम को करिया सतगुरु करले सोई पार लगानी बे ।
नाम विना कहिं नहिं निस्तारा कोटिन कही कहानी बे ३
नाम की महिमा संतन गाई पामर नाम भुलानी बे ।
बे जाने जो नाम लिया है तऊ सुगति दरशानी बे ४
बड़े-बड़े पतितन को तारो रूप में रूप समानी बे ।
नारद व्यास सनक सनन्दन सबकी ऐसी बानी बे ५

दया धर्म की ढाल बाँधकर नाम तीर सरानी बे ।
 पाप बली को ऐसा मारा आवागमन नशानी बे ६
 जग का सब है थोथा धंधा क्यों मरख उरझानी बे ।
 पंडित पूरण ऐसी गाई नामहि मुक्ति निशानी बे ७

दूसरी गारी

मुनियो हो नर चेतौ क्यों नहि जग का झूठा नाता बे ।
 भाई बंधु अरु कुटुंब कबीला कोई साथ नहि जाता बे १
 कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी ऊँचे महल उठाता बे ।
 मेरी-मेरी कहकर धर गए भई संग नहि साथी बे २
 जठराग्नि में रक्षा कीन्ही ताको तू बिसराता बे ।
 धिक् धिक् जीवन तेरा जग में मरख क्यों न लजाता बे ३
 ऋषि मुनियों ने बहुतक गाई तौभी ध्यान न आता बे ।
 मोह बली के फंदा परि गयो प्रभु की याद न करता बे ४
 कामकला ने ऐसा बाँधा घर-घर लातें खाता बे ।
 लोभ शूर ने बेड़ी डाली तासे निकस न पाता बे ५
 सुनता है जब न्यूनता अपनी क्रोध भूत भर आता बे ।
 चार भूत के फंदा फँस गयो जासे फिर जग आता बे ६
 जनम मरन का दुख है भारी क्यों नहि लाजलजाता बे ।
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न पाता बे ७

तीसरी गारी

सुनियो हो तुम सतगुरुसंगी जग की मति बौरानी बे ।
 ईश छोड़कर जीव कहाया क्यों मति तुव भरमानी बे १
 सिंह सपूत छोड़ तू बाना गाड़र हो मिमियानी बे ।
 जनम मरन का दुख तू भोगा चौरासी भरमानी बे २
 चौरासी में अति दुख पाया क्यों नहिं लाज लजानी बे ।
 दैताही में मूरख मरगये आत्मरूप न जानी बे ३
 कोइ हिन्दू कोइ तुरक कहावै भेदवाद सब ठानी बे ।
 अंतरधुनि की खबर न जानी ऊपर कथनी सानी बे ४
 सतगुरु खोज ब्रह्म तुम चीन्हों नहिं तर फिर पछतानी बे ।
 छिन छिन जीवन जात जगत में रहती नहीं निशानी बे ५
 बृक्षा ऊपर बह तिरबेनी यही वेद की बानी बे ।
 इड़ा पिंगला सुषमन उपजी शून्य ध्वजा फहरानी बे ६
 दम पर दम तुम अजपा देखो अजपा अमरनिशानी बे ।
 पूरण है घटभीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

चौथी गारी

तोहिं तन सारी कीने दई तुम सुनियो सुमति सयानी बे ।
 सारी रँगों की खबर नहीं है तासे मति भरमानी बे १
 रँगरेजा नहिं चीन्हों तुमने तासों रूप भुलानी बे ।

है गाफिल कहँलौ समझाऊँ ममता मोह फँसानी बे २
 चटक मटक की छविमें फँस गई चौरासी फिर जानी बे ।
 जिन साहब का सकल पसारा उनको तू बिसरानी बे ३
 शशा सींगवत सुख है जग का तामें तू भरमानी बे ।
 मानत है तू झूठ सत्य कर ऐसी मति बौरानी बे ४
 जिनको तूने संगी जाना संग न जात निशानी बे ।
 चेत चेतकर गुरु को चीन्हों नहिं तर जग फिर आनी बे ५
 सतगुरु चीन्हें दैता मिटि है रूप में रूप समानी बे ।
 विदानंद में बिंदु मिलावै ऐसी सैन लखानी बे ६
 जनम जनम का तप है परगट ज्ञाननेत्र दरशानी बे ।
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

पाँचवीं गारी

सुनियो हो तुम सुमति सयानी अपनी आदि भुलानी बे ।
 देह दिवालय आत्म देवा तिन्ह तज क्यों भटकानी बे १
 पंचतत्त्व का बना दिवाला जामें पुरुष समानी बे ।
 अगम अगोचर शिव तहँ भीतर वेद कही हम जानी बे २
 जिसने खोजा तिसने पाया संतों की यह बानी बे ।
 दश घोड़े का रथ तू सजकर ज्ञान लगाम लगानी बे ३
 मन मतंग को करौ सारथी गुरु से सीख सिखानी बे ।

सुरत निरत से रथबस करके ज्ञानदशा चढ़ जानी बे ४
 खेचर भूचर चाचरि उन्मुन इनको लै दरशानी बे ।
 योग युगति से सबने पाया अलख रूप दिखलानी बे ५
 निर्गुण सर्गुण नहिं कछु भेदा बार बीच उरझानी बे ।
 ब्रह्मज्ञान से मिलता स्वामी निर्गुण सब गुणखानी बे ६
 पूरी पूरी लगन लगावै आवागमन नशानी बे ।
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

छठवीं गारी

सुनियो हो कोइ गुरुमुख ज्ञानी ऋषिमुनियोंकी बानी बे ।
 आदि अंत की खबर भूल गयो तासों फिर जग आनी बे १
 जनम मरन का दुख है भाई क्यों मूरख उरझानी बे ।
 जिन साहब का सकल पसारा उनको तैं बिसरानी बे २
 नव द्वारे का बना पीजरा तामें फिर घुस जानी बे ।
 मनको बसकर तनको कसकर ऐसी युगति मिलानी बे ३
 गुरु शब्द का खड्ग पकड़कर ज्ञान-दीप दिखलानी बे ।
 पाँच चोर घट भीतर देखे जिनमें ऐंचातानी बे ४
 उनको बशकर आशा तजकर शील अंग चढ़ जानी बे ।
 समता दृष्टि बर्तना करके कबहुँ हार ना मानी बे ५
 गुरुबिनु भेद मिलै नहिं घट का तासे रूप भुलानी बे ।

धन दौलत अरु कुटुंब कबीला कोइ संग नहिं चलना बे २
 पाप-पुण्य की शिरपर गठरी बीच में ऐंचाताना बे ।
 नेकी बदी जो ईश्वर देखे जिसको तू न भुलाना बे ३
 नेकी बदी यहाँ रह तेरी और कछू नहिं रहना बे ।
 पाप-पुण्य है संगी तेरो जिसका बदला भरना बे ४
 करना होय सो करले प्यारे नातरु फिर पछताना बे ।
 छिन-छिन जीवन जात जगत में रहता नहीं निशाना बे ५
 मेरा तेरा सब कुछ छोड़ा उतर गयो सब बाना बे ।
 माँझ महल से निकस चला जब खाक में खाक मिलाना बे ६
 लेना होय सो लेले बंदे नातरु कछू न पाना बे ।
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जाना बे ७

दशवीं गारी

सुनियो हो तुम गंगारामा मति तुम्हरी बौरानी बे ।
 खान पान के सुख में भूला जासे टेंटे ठानी बे १
 मरख तोहिं समझायों बहुतक तौभी कछू न जानी बे ।
 मोह भुंड में ऐसा फँसगयो घर की याद भुलानी बे २
 मन मतंग के वश में पड़गयो जासे होत दुखानी बे ।
 चटक मटक के रँग में भूला बहुतक सुनी कहानी बे ३
 लेना हो सो लेले तौते नातरु फिर पछतानी बे ।

कील किवरियाँ भई सब ढीली पिंजरी भई पुरानी बे ४
 पिंजर पाँते हुमस चली हैं हो गयो ताकत हानी बे ५
 टूट पिंजरिया बहुदुख भोगा तो भी लाज न आनी बे ५
 अंडे ते तोहिं सेकर पाला उसको तू बिसरानी बे ६
 टेंटे कर तू बाहर बोला माया कथनी सानी बे ६
 बैरी बिल्ली ग्रसने चाहत समझत लाभ न हानी बे ७
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

ग्यारहवीं गारी

सुनियो हो तुम मेरे प्यारे बाग कबहुँ नहिं जाना बे १
 पँचरँग बाग बना मालिक का जाय देख तुम आना बे १
 नौ लौंगे करणी के वृक्षा जामें तू घुसजाना बे २
 दया दाख अरु क्षमा छुहारे तत्त्व अतूत लगाना बे २
 होश गुलाब चित्त चम्मेली फूल रही फुलवाना बे ३
 कर्म कियारी उसमें काटौ दुर्मत काग भगाना बे ३
 मन माली को वशमें करके अद्भुतरूप दिखाना बे ४
 बाग लगा है काया भीतर जामें तू फिर आ
 अद्भुत बाग बना मालिक का रँग में रँग
 कर संयम की बारि बाग में तुमको आँच
 शील अंग से पानी डालो वृक्षा सू

भाव का भौरा उसमें देखा ताको तू न उड़ाना बे ६
 ऐसी रहनी रहे जो कोई सहज मुक्त हो जाना बे ।
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जाना बे ७

बारहवीं गारी

सुनियो हो बक चेतो क्यों नहिं हंसन की यह बानी बे ।
 हंसन ने बहुतक समझाए तुमने एक न मानी बे १
 छोड़त नहिं तुम बानि आपनी विषको अमृत जानी बे ।
 माया मछरी पकरी तुमने हंस की राय भुलानी बे २
 देश हंस को मानसरोवर उसको नहिं पहिंचानी बे ।
 ज्ञानरूप मुक्ताहल छोड़ो मछली विषय सुहानी बे ३
 अधिक धिक् जीवन तेरा जग में हानि लाभ नहिं जानी बे ।
 चेत चेत बक चेतरे अंधा क्यों दुर्मति अस ठानी बे ४
 देश ढूँढ़ले मानसरोवर छोड़दे ताल तलानी बे ।
 अपना रूप भूल बक फँस गये माया ध्यान लगानी बे ५
 हिंसा तुमने बहुतक कीन्ही दया अंग नहिं आनी बे ।
 दया बिना बक थोथी करनी सुन हंसों की बानी बे ६
 हंसा उड़ हंसन में मिलगये आवागमन नशानी बे
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ७

सुनियो हो नर मणि तू बाँधे गुरु बिन नहिं दिखलानी बे ।
 मोहजाल के भ्रम में पड़कर मणि अपनी नहिं जानी बे १
 जब तक भूल मिटै नहिं तेरी निज मणि हाथ न आनी बे ।
 खाँड़ भरै भुस तूने खाया बिनु गुरु सीख सिखानी बे २
 मृग के पास बसै कस्तूरी जानत नहिं अज्ञानी बे ।
 लाली देखो मेहँदी भीतर तेल तिली पहिचानी बे ३
 है सुगंध फूलों के अंदर पड़ती नहीं लखानी बे ।
 ऐसे साहब है घट भीतर गुरु ज्ञान से जानी बे ४
 अपना साहब है घट भीतर ताकी सुधि बिसरानी बे ।
 दया धर्म की रहनी गहकर गुरुसे सीख सिखानी बे ५
 तेरा स्वामी है घट भीतर ज्ञान-नेत्र दरशानी बे ।
 बिनु गुरु वस्तु मिलै नहिं कबहूँ कोटिक सुनो कहानी बे ६
 ज्ञान का दीपक कर में लेकर फिर घरमें घुस जानी बे
 गंगा यमुना मध्य सरस्वति हरियल रंग मिलानी बे ७
 मरन जियन की दुबिधा मिटगई तिनका ओट दिखानी बे
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जानी बे ८

सुनियो हो तुम मेरे हेती आदि अंत नहिं जाना बे ।

निर्गुण ब्रह्म वेद यश गायो ताहि चित्त में आना बे १
 महावाक्य द्वादश वेदन के आत्मरूप बखाना बे ।
 ईश जीव की करौ एकता महावाक्य में आना बे २
 अलख अगोचर प्रभु तो भीतर तुरिया मिल दरशाना बे ।
 तुरिया मिलकर उन्मुन खेला जीव ब्रह्म होजाना बे ३
 ज्ञान ध्यान से भीतर घुसकर जीवनमुक्त कहाना बे ।
 शुद्ध स्वरूप आत्मा घट में वेद कहत हम जाना बे ४
 ईश्वर तेरा है घट माहीं बाहर क्यों भटकाना बे ।
 मेरा-तेरा छोड़ दे बंदे कोइ संग नहि जाना बे ५
 लगन लगा ले दिल के भीतर नातरु फिर पछताना बे ।
 पाप-पुण्य है तेरा साथी आखिर को मिटजाना बे ६
 आत्म चीन्हौं दुविधा मिटिह रूप में रूप मिलाना बे ।
 पूरण है घट भीतर सबके बाहर कछू न जाना बे ७

इति चतुर्दशज्ञानगारी सम्पूर्णा ।

अष्टपदी

प० टेक—जा मन मनमें भूल पड़ी है आन ।

काम क्रोध के बश में भूलौ चौरासी भरमान ।

लोभ मोह के फंदा फँसगयो जासे निकस न पान १

जिनको तूने साथी जाना साथ न जात निशान ।
 उलटा चलता उलटा बोले उलटा जग में आन २
 पोथी पुरान सुने नहिं कबहुँ नाच रंग मन मान ।
 चौरासी में अति दुख पाया तौ भी शरम न खान ३
 जिन साहब का सकल पसारा उनको तू बिसरान ।
 कह पूरण जो तेरा स्वामी उसकी कर पहिंचान ४

दू० टेक—जा मन की भूल कबहुँ नहिं जाय ।

देखत सुनत विचारत यह मन तौ भी धोखा खाय ।
 जग-समुद्र में ऐसा भूला फिर फिर गोता खाय १
 मरन जियन की याद भूल गयो जासे फिर जग आय ।
 तेरा स्वामी है घट भीतर ताको तू बिसराय २
 गर्भवास को त्रास भूल गयो क्यों नहिं नीच लजाय ।
 मेरी तेरी छोड़ दे मूरख नातरु फिर पछताय ३
 निशि वासर तू भ्रमत फिरत है कबहुँ हार न पाय ।
 कह पूरण जो तेरा स्वामी उसकी शरणै जाय ४

ती० टेक—करो मन चलने की तदंबीर ।

पिंजर तेरा हुआ पुराना काल मारि है तीर ।
 जिसको तैने अमृत समझा यम की परिहै भीर १
 काल किवरियाँ भई सब ढीली नैनन टपके नीर २

पातें तेरी हुमस चली हैं भीना पड़ गया चीर २
 गति तेरी है चंचल मनुवाँ नेक न धरता धीर ।
 स्वामी तेरा है घट भीतर वही मेटिहै पीर ३
 दश घोड़ों को वश में करके चीन्हों आतम वीर ।
 कह पूरण जो आतम चीन्हें वही जगत में मीर ४
 चौ० टेक—या मन को झूठ सकल व्योपार ।

काम कला के फंदा परकर तकत फिरत परनार ।
 चटक मटक की छवि में भूला फँस गयो कामिनिजार १
 बालापन तूने खल गँमाया कुछ नहि जाना सार ।
 आई जवानी मस्त हुआ है करता नहीं सँभार २
 वृद्धापन जब आया तेरा हेल मेल भयो छार ।
 इंद्री शिथिल भई सब तेरी मिटिगो सकल व्योहार ३
 लोग कुटुंब सब दुश्मन हो गये अब शिर दैदँ मार ।
 कह पूरण तू मनुवाँ मेरे आतम चीन्हों सार ४

पाँ० टेक—या मन की चंचलता नहि जाय ।
 देखत सुनत विचारत यह मन तौ भी गोता खाय ।
 मरन जियन को कष्ट भूल गयो तासों फिर जग आय १
 खान पियन के सुख में भूला तिरिया से मुसकाय ।
 तिरिया में मन ऐसा फँसगयो घर घर लातें खाय २

मात पिता सब दुश्मन हो गये नारी लै भग जाय ।
नारी में मन ऐसा मोहा तासैं निकस न पाय ३
चंचलता तू छोड़के मनुवाँ हरि का ध्यान लगाय ।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे आत्म चीन्हों जाय ४

छ० टेक—या मनने कबहुँ न कीन विचार ।

सारासार विचार न कीन्हों फँसगयो मायाजार ।
बुरी घरी जब इसपर बीती तब शिर दैदैं मार १
सुन्न भीत पर चित्र लिखत है जामें कुछ नहिं सार ।
अपनी प्रभुता निशिदिन चाहै घूमें बारम्बार २
निर्बल देखिकै दंढ मचावें लाखों देवें गार ।
सबल देखि चुपके होजावें ऐसा नीच गँवार ३
अपने मुखते अपनी अस्तुति निशिदिन करत अपार ।
कह पूरण तू मनुवाँ मेरे चीन्हों आत्म सार ४

सा० टेक—या मन को ज्ञान ध्यान में लाय ।

जैसी संगति मनुवाँ पावे वैसी में धसजाय ।
संगति जाको उड़कर लागै सौ सौ कसमें खाय १
भली बुरी जब इस पर बीतै पाछे को पछताय ।
दश सखियों के रंग में भूला घर घर में घुसजाय २
पवन से वेग चलै जो मनुवाँ बिन देखे सब खाय ।

कोइ कोइ साधू यती शूरमा इसको नाच नचाय ३
 ज्ञान लगाम लगाकर इसको भीतर को घुस जाय ।
 कह पूरण तू मनुवाँ मेरे सहज भक्त हो जाय ४

आ० टेक—या मनकी लाज शरम गई छूट ।

नारी में नर ऐसा मोहा सबमें पारै फूट ।
 लालच में मन ऐसा भूला निशि दिन बोलत भूठ १
 अरबन खरबन बहुतक जोड़े तउ खाली रहि मूठ ।
 दौड़त दौड़त ऐसा दौड़ा भ्रमत फिरत चहुँ खूँट २
 ऐसा अवसर चूका जाता लूटत बने सो लूट ।
 काल बली जब फंदा डाले धर शिर मारे कूट ३
 माँझ महल से निकस चलो जब सब से नाता टूट ।
 कह पूरण तू मनुवाँ मेरे देखो राम अटूट ४

इत्यष्टपदी सम्पूर्णा



बलवंत-नग्न स्थान है, जन्मभूमि सो जान ।
 भाँसी जासों कहत हैं, आतमज्ञान बखान ॥

संगीत-राग-भजन आदि संबंधी पुस्तकें—

श्रीकृष्ण-गीतावली ...	१)	आनंद-सागर (भाग १)	॥२)
काशी भजनावली ...	१॥	” ” (भाग २)	॥१)
ख्यालात मातादीन ...	३)	प्रेम-रत्न ...	३)
गोपीचंद भरथरी ...	१)	भक्त रसनामृत ...	१)
चौताल रसिक-मनहरण		जानकी-चरण-चामर...	१)
(पाँचों भाग) ...	१॥	धर्म-प्रेम-तरंग ...	१)
चुरिहारिन लीला ...	१॥	नवीन गज़ल-संग्रह ...	१॥
अपूर्व भजन-लता ...	१॥	नवरत्नभाष्य वृन्दावन-	
आनंद-लहरी ...	१॥	विलास ...	३)
अनुराग-रस ...	१॥	धर्मोपदेश ...	१)
अर्ज-पत्रिका ...	१)	प्राविष्ट-प्रिया...	१)
अष्टगाम ...	१)	प्रेमावली ...	१)
काम-कटारी...	१॥	प्रेम-प्रकाश ...	१॥
छंद-प्रकाश ...	१)	प्रेम-रसामृत ...	१)
भजन-रामायण ...	१॥	सती-विलास ...	१)
भजन-प्रभाती ...	१॥	मन-मोहिनी ...	१)
भजन-रत्नाकर ..	१॥	भजन विनय-पच्चीसी	१)
भजन-माला ...	१॥	भजन-संग्रह...	३)

नोट—अन्यान्य पुस्तकों के लिये १) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाइए ।

मिलने का पता—
मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस, (बुकडिपो)
हज़रतगंज, लखनऊ.